International Journal of Scientific Research in Science and Technology
Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X (www.ijsrst.com)
doi : https://doi.org/10.32628/IJSRST

विद्यार्थियों में शैक्षिक पिछड़ेपन के कारणों की पहचान करने हेतु : एक अध्ययन

[1]Nandkishore Gilhare, Research Scholar, Kalinga University, Naya Raipur, Chhattisgarh, India
[2]Dr Harsha Patil, Associate Professor, Kalinga University, Naya Raipur, Chhattisgarh, India
[3]Dr Ram Prakash Saini, Associate Professor, Kalinga University, Naya Raipur, Chhattisgarh, India

Article Info
Volume 8, Issue 4
Page Number : 704-707

Publication Issue
July-August-2021

Article History
Accepted : 07 Aug 2021
Published : 14 Aug 2021

सार : इस अध्ययन का उद्देश्य एक नए दृष्टिकोण का लक्ष्य है,अकादमिक उपलब्धि आम तौर पर एक अभिव्यक्ति होती है, जब व्यक्ति अपनी ऊर्जा को दी गई जन्मजात क्षमता और सामाजिक दबाव के एक विशेष प्रतिरूप के साथ उपयोग करना सीखता है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि जन्मजात क्षमता और पर्यावरणीय कारक दोनों शैक्षणिक उपलब्धि में समान रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, इन दोनों कारकों के परस्पर क्रिया पर ध्यान देना अनिवार्य है। शैक्षणिक उपलब्धि के संदर्भ में जन्मजात क्षमता मुख्य रूप से बौद्धिक कार्यों के माध्यम से प्रदर्शित होती है, और निश्चित रूप से बौद्धिक कार्यों और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच एक सकारात्मक संबंध है। हालांकि, कुछ भ्रमित करने वाले कारक हैं जो इस जन्मजात क्षमता के प्रभाव को छुपाते हैं और बदले में, छात्र की पढ़ाई के दौरान बच्चे की शैक्षणिक उपलब्धि में बाधा डालते हैं। विशेष रूप से छात्रों का यह समूह वे हैं जो अधिक आंतरिक होते हैं। माता-पिता और शिक्षक भी इससे वंचित नहीं हैं, क्योंकि सभी बाहरी बाधाओं के अभाव में और पर्याप्त और आवश्यक बौद्धिक क्षमताओं की उपस्थिति के साथ, वे हासिल करने में असफल होते हैं। वर्तमान अध्ययन में इस आवश्यकता को बौद्धिक कार्यों का आकलन करके और विभिन्न पर्यावरणीय कारकों का दोहन करके पूरा किया गया है जो इस उथल-पुथल के लिए जिम्मेदार हो सकते हैं। यह देखा गया है कि बच्चे का व्यक्तित्व एक बहुत ही उज्ज्वल और एक प्रभावशाली कारक है जो एक बच्चे को अकादमिक उत्कृष्टता में सहायता करता है।

अध्ययन का व्याप्ती

इस अध्ययन से वर्तमान शिक्षा प्रणाली में सबसे अधिक दबाव वाले मुद्दों में से एक पर विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालने की उम्मीद है जो छात्रों की क्षमता से काफी कम है। इस स्थिति को प्रभावित करने वाले विभिन्न पहलुओं की जांच करने के कई फायदे हैं। सबसे पहले, यह कई सूचनात्मक निष्कर्षों को प्रकट करने के लिए तत्पर है, और इस स्थिति के बारे में ज्ञान की गुणवत्ता में वृद्धि करके। दूसरा, इस स्थिति के विभिन्न मुद्दों पर स्कूलों, परिवारों और सरकार के नीति निर्माताओं को विशद सिफारिशें की जा सकती हैं ताकि अनुक्रमित छात्रों को उनकी समस्याओं से बाहर निकलने में मदद मिल सके। तीसरा, मनोवैज्ञानिकों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, शिक्षकों और माता-पिता के नेट वर्किंग को मजबूती से बुना जा सकता है, ताकि उन छात्रों को प्राथमिक, माध्यमिक और तृतीयक सामाजिक समर्थन प्रणाली प्रदान की जा सके। चौथा, निष्कर्ष उन लोगों की मदद करेंगे जो इस स्थिति के विभिन्न पहलुओं के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए आउटरीच कार्यक्रमों से जुड़े हैं। पांचवां, अध्ययन इस क्षेत्र में आगे की जांच के लिए एक शुरुआत के रूप में हो सकता है। निष्कर्ष रूप से, अन्वेषक को उम्मीद है कि यह अध्ययन संबंधित छात्रों, शिक्षकों, परिवार के सदस्यों और अन्य सभी के लिए बहुत उपयोगी होगा जो शिक्षा के क्षेत्र में और असाधारण बच्चों के कल्याण में रुचि रखते हैं। इस प्रकार शैक्षणिक निम्न उपलब्धि के विरुद्ध अभियान में निहित मिथक और वास्तविकता के हानिकारक मिश्रण का पता लगाया जाता है।

मुख्य उद्देश्य

बच्चों में शैक्षिक पिछड़ापन पैदा करने वाले कारकों की पहचान करना और शैक्षिक पिछड़ेपन को कम करने में उनकी मदद करने के उपाय सुझाना;

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

अध्ययन की परिकल्पना

बालक एवम बालिकाओ बीच शैक्षिक पिछड़ेपन में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष

विश्लेषण और परिणामों की व्याख्या के आधार पर, नीचे दर्ज किए गए प्रमुख निष्कर्ष निकाले गए हैं।

(I) सामाजिक-जनसांख्यिकीय विशेषताओं से संबंधित निष्कर्ष

कुल 200 छात्रों (100 लड़कियों, 100 लड़कों) का अध्ययन किया गया। लड़कियों का कुल प्रतिशत 50% और लड़कों का 50% था। निगम के स्कूलों में लड़कियों की संख्या 47% निजी स्कूलों की तुलना में 63% अधिक पाई गई। निगम स्कूलों में, लड़कियों (70%) ने लड़कों (30%) की तुलना में उच्च उपलब्धि हासिल करने वालों के रूप में बेहतर प्रदर्शन किया। निजी स्कूलों में उच्च उपलब्धि प्राप्त करने वालों के रूप में लड़के (51%) लड़कियों (49%) की तुलना में मामूली रूप से बेहतर थे।

नामांकित 100 छात्र निगम के स्कूलों से और 100 निजी स्कूलों से थे। 50 विद्यार्थी 8वीं कक्षा में, 25 9वीं कक्षा में और 25 विद्यार्थी 10वीं कक्षा में थे। अध्ययन के लिए नामांकित किशोरों की कुल औसत आयु १४.३५ ± १ वर्ष थी। छात्रों को उनके ग्रेड के अनुसार समूहीकृत किया गया था

(II) माता-पिता की शिक्षा से संबंधित निष्कर्ष

निजी स्कूलों में हाई अचीवर्स अधिक थे। कम उपलब्धि प्राप्त करने वालों की महत्वपूर्ण संख्या निगम विद्यालयों से संबंधित थी। माता-पिता के उच्च शैक्षिक स्तर के परिणामस्वरूप किशोरों में उच्च उपलब्धि प्राप्त हुई।

(III) सामाजिक प्रभाव से संबंधित निष्कर्ष

माता-पिता और भाई-बहनों के बीच झगड़ों, टूटे हुए घरों, माता-पिता में मादक द्रव्यों के सेवन और घर पर जिम्मेदारियों के रूप में घर में परेशान करने वाले किशोर 13% थे, जिनमें से 17% निगम स्कूल से थे और 9% निजी स्कूलों से थे। कम उपलब्धि प्राप्त करने वालों में से 18% और उच्च उपलब्धि प्राप्त करने वालों के 9% में उपरोक्त परेशान करने वाले कारक थे। 18% को माता-पिता (13%), दोस्तों (37%), भाई-बहनों (13%) और दोस्तों या पड़ोसियों (37%) के साथ समायोजन की समस्या थी।

निजी स्कूल के छात्रों (20%) में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण ($p<0.05$) निगम स्कूल किशोरों (15%) की तुलना में अधिक समायोजन समस्याएं थीं, खासकर जब कम उपलब्धि समूह (निजी में 44% से निगम में 17%) की तुलना में। हालाँकि बहुभिन्नरूपी विश्लेषण ने कोई महत्वपूर्ण जुड़ाव नहीं दिखाया। टेलीविजन देखने पर बिताया गया समय वर्तमान अध्ययन में ग्रेड को प्रभावित नहीं करता है। 51% किशोरों ने 1 घंटे तक टीवी देखा और 32% किशोरों ने 2 घंटे तक टीवी देखा। निजी स्कूलों में पढ़ने वाले किशोरों में टेलीविजन देखने का कुल घंटे लगभग 11 घंटे/सप्ताह था और निगम के स्कूलों में पढ़ने वालों में <10 घंटे/सप्ताह था।

(IV) अध्ययन की आदतों से संबंधित निष्कर्ष

नियमित उपस्थिति जैसे कारक, घर पर अध्ययन के लिए सहायता होना, ट्यूशन में भाग लेना, प्रतिदिन गृहकार्य पूरा करना, प्रश्न बैंक हल करना, नियमित रूप से अध्ययन करना या परीक्षा से ठीक पहले अध्ययन करना। नियमित उपस्थिति वाले किशोरों की संख्या ९६% थी, और निजी स्कूलों से ९८% अधिक थे और महत्वपूर्ण थे। (पी <0.01)।

कुल 60% किशोरों ने घर पर अध्ययन के लिए मदद की, 27% किशोरों को माता-पिता और भाई-बहनों दोनों से मदद मिली, उसके बाद 22% ने माँ से। ट्यूशन में भाग लेने वाले किशोर ४३% थे, जिनमें ३३% निगम से थे और ५२% निजी स्कूलों से थे। वर्तमान अध्ययन में दोनों विद्यालयों में उच्च उपलब्धि प्राप्त करने वाले तथा कम उपलब्धि प्राप्त करने वालों ($p<0.01$) के बीच सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण संबंध पाया गया।

४९% किशोर प्रतिदिन नहीं पढ़ते थे, जिनमें से ३६% निगम के स्कूलों से थे। 31% किशोरों ने दिन-प्रतिदिन के आधार पर नियमित रूप से अध्ययन न करने के कारण 22% तक पर्याप्त समय न मिलने के कारण स्थगित करने की आदत दी।

नियमित रूप से गृहकार्य करने वाले किशोरों की संख्या ८३% थी, जिसमें ८१% निगम से और ८६% निजी स्कूलों से थे। यूनीवेरिएट विश्लेषण ने कम उपलब्धि प्राप्त करने वालों में कोई अंतर नहीं दिखाया। उच्च के बीच महत्वपूर्ण अंतर ($p<0.01$) था।

दोनों श्रेणियों के स्कूलों (83% निगम और 94% निजी) में नियमित रूप से गृहकार्य करने वाले अचीवर्स। किशोरों ने शिक्षकों (56%) के साथ संदेह स्पष्ट नहीं किया, 83% किशोर शिक्षकों से अपने संदेह पूछने से डरते थे। ८९% किशोर अपने शिक्षकों को उत्साहजनक मानते हैं और उनमें से ६% अपने शिक्षक को पक्षपाती मानते हैं। 41% किशोरों ने प्रश्न बैंक हल किया था। हाई अचीवर्स (39%) में प्रश्न बैंक हल करने वाले किशोरों में महत्वपूर्ण अंतर ($p<0.01$) था, 54% निगम स्कूलों से थे और 33% निजी स्कूलों से थे। 37% किशोरों ने परीक्षा से ठीक पहले अध्ययन किया, 59% कम प्राप्तकर्ताओं ने परीक्षा से ठीक पहले अध्ययन किया, जबकि 26% उच्च प्राप्तकर्ताओं ने ऐसा ही किया।

बहुभिन्नरूपी विश्लेषण लॉजिस्टिक रिग्रेशन विश्लेषण (तालिका 5) के माध्यम से किया गया था। इससे पता चलता है कि यदि किसी छात्र को दुर्दम्य त्रुटि है तो शैक्षिक प्रदर्शन 4.219 गुना कम हो जाता है, 3.623 गुना, यदि कोई छात्र घर पर उसकी पढ़ाई में मदद नहीं करता है, तो 5.235 गुना यदि कोई छात्र नियमित रूप से गृह कार्य नहीं करता है, तो 3.394 गुना यदि कोई छात्र प्रश्न बैंक के प्रश्नपत्र हल नहीं करता है, तो 3.802 गुना यदि कोई छात्र परीक्षा से पहले पढ़ता है। प्रदर्शन में कमी स्वास्थ्य, सामाजिक और स्कूल तीनों क्षेत्रों में कारकों की परस्पर क्रिया का परिणाम है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष निकालने के लिए, प्रत्येक स्कूल में शैक्षिक प्रदर्शन और योजना हस्तक्षेप रणनीतियों के निर्धारकों की पहचान करना संभव है। इस अध्ययन के परिणाम नई रणनीतियों को लागू करने, सख्त अध्ययन पैटर्न पर ध्यान केंद्रित करने और अध्ययन के लिए अनुकूल स्कूल और घर के माहौल को बनाने के महत्व को उजागर करते हैं, ताकि बेहतर शैक्षिक प्रदर्शन हो सके।

शैक्षिक निहितार्थ और सुझाव

आज के बच्चे कल के नागरिक हैं, वे देश के स्तंभ बनने जा रहे हैं। इसलिए यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि प्रत्येक स्तंभ दूसरे की तरह मजबूत हो। इसके अलावा, हम पिछड़े शिक्षार्थियों के उत्थान के बिना इष्टतम मानव संसाधन विकास नहीं ला सकते हैं, जो छात्र आबादी का लगभग 18% है। इस बात की पूरी संभावना है कि प्रत्येक कक्षा में पिछड़े शिक्षार्थी हों। यह प्राथमिक और उच्च विद्यालय स्तर पर अधिक सच है। वे नियमित रूप से स्कूल आते हैं, लेकिन अगर उनकी ज़रूरतों को पर्याप्त रूप से पूरा नहीं किया गया तो उनके स्कूल छोड़ने की संभावना है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से पिछड़े शिक्षार्थियों की यथाशीघ्र पहचान करना अधिक लाभदायक होगा। जितनी जल्दी उनकी पहचान की जाती है, उतनी ही जल्दी उन्हें उपचारात्मक निर्देश के अधीन किया जा सकता है। इसके लिए सबसे पहले, कमियों की पहचान की जानी है और कुछ नैदानिक परीक्षण करने वाले विशेषज्ञों द्वारा पुष्टि की जानी है। फिर विशिष्ट पिछड़ेपन से निपटने के लिए विशेषज्ञों की विशेषज्ञता का उपयोग किया जा सकता है। पिछड़े बच्चों के साथ व्यवहार करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखा जा सकता है।

1. पिछड़े शिक्षार्थियों की क्षमता, अनुभव और शैक्षिक स्तरों को ध्यान में रखते हुए पाठों की सामग्री को सावधानीपूर्वक वर्गीकृत किया जाना चाहिए।
2. शिक्षकों को अभ्यास, ड्रिल और समीक्षा को उचित महत्व देना चाहिए जिससे पिछड़े बच्चों की समझ और प्रतिधारण की सुविधा होगी।
3. पिछड़े शिक्षार्थी अमूर्त विचारों के बजाय ठोस विचारों को समझने में सक्षम होते हैं। अतः जहाँ तक संभव हो पिछड़े शिक्षार्थियों की शिक्षण प्रक्रिया के लिए मल्टीमीडिया दृष्टिकोण का पालन किया जाना चाहिए।
4. पिछड़े शिक्षार्थी आसानी से थकान, ऊब और सीखने में अरुचि के प्रति संवेदनशील होते हैं। इसलिए विभिन्न श्रव्य-दृश्य साधनों का उपयोग करके और विभिन्न निर्देशात्मक रणनीतियों को अपनाकर निर्देश को रोचक बनाया जाना चाहिए।
5. पिछड़े बच्चों के साथ व्यवहार करने में मित्रवत दृष्टिकोण अत्यधिक अनुकूल होता है। प्रोत्साहित करने वाले शब्द, सकारात्मक सुदृढीकरण, उचित समय पर प्रशंसा का पिछड़े शिक्षार्थियों की सीखने की क्षमता पर प्रभाव पड़ेगा।

संदर्भग्रंथ

1. ग्रिग्स, सी. (1990). प्राथमिक विद्यालय के पाठ्यक्रम में विज्ञान, बुलेटिन नंबर 2। द स्कूल मास्टर पब्लिश्ड कंपनी लिमिटेड, लंदन।
2. कपूर, एस.के., शेनॉय, एम.जे., और कपूर, एम. (1996)। 5 से 8 वर्ष के बच्चों में शैक्षिक पिछड़ेपन की व्यापकता। इंडियन जर्नल ऑफ साइकोलॉजी, 38,14,201 -207।
3. किर्क, एस। (1972)। असाधारण बच्चों को शिक्षित करना। ह्यूटन मिफ्लिन कंपनी, बोस्टन।
4. लुम्बेंटोबिंग, आर। (2006)। प्रारंभिक विज्ञान पाठ्यक्रम और इंडोनेशिया और जापान के बीच पाठ्य पुस्तक में प्रक्रिया कौशल पर तुलनात्मक अध्ययन। शिक्षा के स्नातक स्कूल का बुलेटिन, हिरोशिमा विश्वविद्यालय, भाग -2, कला और विज्ञान शिक्षा, 5,3, 31-38।
5. महा, एच. (1994)। शिक्षकों के बीच संबंध ने रचनात्मकता और कक्षा में उनके वास्तविक व्यवहार के प्रति दृष्टिकोण व्यक्त किया। एडुट्रैक, 5,2, 13-16।